पाठ 17. दौड़

पाठ का परिचय

यह पाठ दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेने वाली एक लड़की की मन:स्थिति पर आधारित है। सारिका विद्यालय की ओर से ज़िला स्तर पर 100 मी॰ की दौड़ में भाग ले रही थी। वह बहुत परेशान थी। वह दौड़ जीतना चाहती थी। उसके पिता शिवशंकर ने उसे धैर्य बँधाया। उन्होंने उसे समझाया कि यदि वह जीतेगी तो उसे इनाम मिलेगा और अगर हार जाएगी तो जीतने का दूसरा मौका। इसलिए परेशान होने से कोई लाभ नहीं। फिर उन्होंने उसके अभ्यास के बारे में पूछा और उससे तनावमुक्त होकर ईश्वर से प्रार्थना करने के लिए कहा। उन्होंने उससे कहा कि जब दौड़ शुरू हो तो वह केवल अंतिम छोर पर ध्यान रखे और जल्दी से जल्दी वहाँ पहुँचने की कोशिश करे।

दौड़ का समय हुआ। सारिका मैदान में पहुँची और उसने अपने पिता जी द्वारा बताई बातें याद कीं। दौड़ शुरू हुई और सारिका जीत गई। उसके माता-पिता उस पर गर्व कर रहे थे। उसने भी अपनी जीत का श्रेय अपने पिता को दिया।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

केवल सपने देखना ही काफ़ी नहीं है, उन्हें पूरा करने के लिए प्रयत्न भी करने होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं पर पूरा विश्वास होना चाहिए। एक समय आता है जब उसकी मेहनत अपने-आप उसे बुलंदियों पर ले जाती है।

पाठ का वाचन

स्वयं एक-एक अनुच्छेद का वाचन करते हुए प्रश्नोत्तर विधि से पाठ को स्पष्ट करें। बच्चों से एक-एक अनुच्छेद पढ़वाएँ और बीच-बीच में उनसे प्रश्न भी करें।

महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों के साथ निम्न प्रश्नों पर आधारित चर्चा करें –

- उन्हें सबसे ज़्यादा रुचि किस काम में है?
- चित्रकला, संगीत, गायन, लेखन, खेल में से उन्हें क्या करना अच्छा लगता है और क्यों?
- आगे चलकर वे किस कला में अपने-आप को श्रेष्ठ बनाना चाहेंगे?